SUBJECT - HISTORY
CLASS - THIRD SEMESTER
Paper - IV - C
Political History of Modern India
(up to 1857 A.D.)

पानीपत का तृतीय युद्ध

पानीपत इतिहास में युद्ध भूमि के रूप में जाना जाता है। यहाँ ऐतिहासिक महत्त्व के तीन युद्ध लड़े गए थे। पानीपत का तीसरा युद्ध भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है जो 14 जनवरी 1761 के अफगान अहमदशाह अब्दाली तथा मराठा सेना सदाशिव राव भाऊ के नेतृत्व के बीच लड़ा गया।

10 जनवरी 1760 को बरार घाटी की लड़ाई में दत्ता जी सिंधिया मारा गया और दिल्ली पर अहमद शाह अब्दाली ने अधिकार कर लिया। अतः अब्दाली की शक्ति को रोकने के लिए पेशवा ने अपने चचेरे भाई सदाशिव राव भाऊ के नेतृत्व में एक विशाल सेना दिल्ली की ओर भेजी। अगस्त 1760 में अब्दाली से दिल्ली का कब्जा छुड़वा लिया गया। इससे अब्दाली तिलमिला उठा।

कुछ भारतीय सरदार भी अब्दाली की ओर मिले हुए थे तथा मराठों के साथ कुछ भारतीय सरदार मूक दर्शक के रूप में भी थे। दिल्ली में खाद्य सामग्री के अभाव के कारण अधिक समय नहीं रूका जा सकता था अतः मराठे प्रमुख अफगान केन्द्र कुंजपुरा पर अधिकार कर लेते हैं। दोनों तरफ से युद्ध की रणनीति बनाई जारी है। मराठों का औपचारिक नेतृत्व पेशवा का बड़ा पुत्र विश्वास राव कर रहा था। नवम्बर 1760 में दोनों सेनाएँ एक–दूसरे के आमने–सामने होती है। पानीपत के मैदान में एक बार फिर जनवरी 1761 में एक निर्णायक युद्ध लड़ा जाता है।

पानीपत के III युद्ध में मराठों को असफलता के कारणों, परिणामों की विवेचना कीजिये ?

पानीपत का III युद्ध 1761 AD में सदाशिव राव भाऊ की मराठा सेना और अहमदशाह अब्दाली के बीच जिसमें मराठा सेनाओं की पराजय हुई। इस युद्ध में मराठा सेनाओं की पराजय के मुख्य कारण अग्रांकित है।

1. इस युद्ध में मराठा सेना की पराजय का पहला मुख्य कारण मराठों की तुलना में अहमदशाह अब्दाणी की सैनिक संख्या का अधिक होना था। उदाहरण के लिये सर जदुनाथ सरकार ने तत्कालीन लेखों के आधार पर इस युद्ध में मराठों की सैनिक संख्या 45,000 और अहमदशाह अब्दाली की 60,000 बताई है।

2. यद्यपि सदाशिव राव भाऊ एक निडर और साहसी यौद्धा माना जाता था किंतु उसकी तुलना में अहमदशाह अब्दाली अधिक कुशल और अनुभवी सेनानायक था और वह उस समय एशिया का सर्वश्रेष्ठ सेनानायक माना जाता था।

3. इस युद्ध में मराठों की पराजय का तीसरा मुख्य कारण मराठा सेना में संगठन और अनुशासन का अभाव होना था जबकि मराठा सेना के विपरीत अहमदशाह अब्दाली की सेना पूर्णतया संगठित और अनुशासित थी।

4. यद्यपि इस युद्ध में इब्राहीम खाँ गर्दी के नेतृत्व में मराठों के पास एक विशाल तोपखाना था, किंतु समग्र रूप में अस्त्र–शस्त्रों और सैनिक साधनों की दृष्टि से अहमदशाह अब्दाली की स्थिति मराठों से श्रेष्ठ थी।

5. इस युद्ध में मराठों की पराजय का एक मुख्य कारण मराठों की लूटमार नीति जिसके फलस्वरूप उन्हें अहमदशाह अब्दाली के विरूद्ध इस युद्ध में हिन्दु शासकों का समर्थन प्राप्त नहीं हुआ, जबकि मराठों के विरूद्ध अहमदशाह अब्दाली को इस युद्ध में अजीबुद्दौला और शुजाउद्दौला जैसे मुस्लिम सरदारों के नेतृत्व में भारतीय मुसलमानों का उसे पूर्ण समर्थन प्राप्त होना।

6. इस युद्ध के पूर्व मराठा सेना में अन्न का अभाव हो जाना मराठा सेना की पराजय का एक मुख्य कारण सिद्ध हुआ जिसके फलस्वरूप मराठा सेनाओं की अन्न के क अभाव के फलस्वरूप तीन दिन तक भुखे मरने के बाद यह युद्ध लडना पडा। जिसके फलस्वरूप वे अपनी पूरी शक्ति के साथ अहमदशाह अब्दाली का प्रतिरोध नहीं कर सके।

युद्ध के परिणाम

परिणामों की दृष्टि से पानीपत III युद्ध हिंदुस्तान के अत्यंत निर्णायक युद्धों में से एक माना जाता है। इस युद्ध के मुख्य परिणाम अग्रलिखित है –

1. यह युद्ध मराठों के लिये अत्यंत विनाशकारी सिद्ध हुआ था क्योंकि इस युद्ध में सदाशिव राव भाऊ और पेशवा के ज्येष्ट पुत्र विश्वासराव के साथ अनेक उच्चकोटी के मराठा सरदार और लगभग 90,000 मराठे इस युद्ध में मारे गये।

2. इस युद्ध के बाद समस्त भारत पर मराठों द्वारा अपना राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने की योजना भंग हो गई और मराठा शक्ति का पठन प्रारंभ हो गया।

3. इस युद्ध के पूर्व तक मराठा सेनाऐं भारत में अजेय माने जाने लगे किंतु इस युद्ध में मराठों की जो पराजय हुई उसके फलस्वरूप मराठों की सैनिक प्रतिष्ठा बिल्कुल खत्म हो गई।

4. इस युद्ध के परिणामों की विवेचना करते हुये सर जादूनाथ सरकार ने लिखा है कि इस युद्ध का सर्वाधिक हानिकारक परिणाम यह हुआ कि इस युद्ध में अधिकांश उच्चकोटी के मराठा सरदारों की मृत्यु हो जाने के फलस्वरूप अब रघुनाथ राव राधोबा जैसे षड़यंत्रकारी व्यक्ति को अपने षडयन्त्रों की क्रियान्वित करने का अवसर प्राप्त हो गया जिसके फलस्वरूप अंत में पेशवा परिवार में गृहकलह उत्पन्न हो गया और जो मराठा शक्ति के पतन का एक मुख्य कारण था।

5. इस युद्ध के बाद मराठा शक्ति का जो पतन प्रारंभ हुआ इसके फलस्वरूप भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो गया।

इस प्रकार पानीपत III युद्ध के बाद मराठा शक्ति का जो पतन प्रारंभ हुआ उसके बाद में मराठे अपनी राजनैतिक सर्वोच्चता को पुनः स्थापित नही कर सके और भविष्य में जाकर अनेके परिस्थितियों के फलस्वरूप भारत में मराठा शक्ति का पूर्णतया पतन हो गया।

****

Dr. Kailash Chand Gurjar
Department of History
MLSU, Udaipur (Raj.)